Shri Ganpati Swapana Sadhana

||श्रीगणपति स्वप्न साधना सिद्धि||

SHRI RAJ VERMA JI

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

भविष्य और जीवन में होने वाली शुभ-अशुभ घटनाओं एवं अपने जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण प्रश्नों की जानकारी प्राप्त करने हेतु स्वप्न विद्या एक विशिष्ट साधना है। मनुष्य का जीवन कई बार ऐसी विकट परिस्थिति में आ जाता है जिसमें उसे अपने कैरियर में किस दिशा में चलना है, क्या करना है और क्या नहीं करना है उसका चुनाव कर पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है। अगर सही दिशा या कार्य का पूर्व में ही ज्ञान हो जाये तो जीवन में निर्विरोध शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो जाती है। स्वप्न विद्या के बल से मनुष्य शुभ-अशुभ की जानकारी पूर्व ही प्राप्त कर सकता है जिसके सुप्रभाव से अपने भाग्य को काफी हद तक सुधारा जा सकता है। इस विद्या के माध्यम से साधक अपने इष्टदेव एवं साधना सम्बन्धी जानकारी भी प्राप्त

कर सकता है। सही मार्गदर्शन और विधि के माध्यम से साधक निःसन्देह इस विद्या से लाभ अर्जित कर सकता है।

किसी मंत्र अथवा देवता के नाम को बारम्बार स्मरण करने की प्रक्रिया को ही जप कहा जाता है। जप देवता की छाया अथवा उसका साक्षात्कार करने का एक सुलभ एवं दिव्य मार्ग है। देवताओं के स्वरूप को जानने, उनसे सहयोग लेने और सम्पर्क बनाने के लिये मंत्र विद्या का आश्रय लिया जाता है। इस विद्या में पूर्ण सफलता हेतु साधक का धर्माचरण के रूप में विकसित होना अत्यावश्यक है। धर्माचरण के प्रभाव से देवता कम समय में ही मनुष्य का आवश्यक कार्य सिद्ध कर देते हैं। भगवान् की पूजा के लिये सात पुष्प परम उपयोगी हैं- अहिंसा, इन्द्रियसंयम, प्राणियों पर दया, क्षमा, मन को वश में रखना, ध्यान और सत्य। भगवान् की मूर्ति का दर्शन, स्पर्श, भजन-पूजन, कथन, कीर्तन, मनन, चिंतन करते रहने से उपास्यदेव साधक के ध्यान में बैठकर चित्त में खेलने लगते हैं, स्वप्न में आकर आदेश भी सुनाते हैं।

देवता को प्रसन्न करने वाला मंत्र सदगुरु से प्राप्त होता है। इसलिये मंत्र, गुरु और देवता अभिन्न हैं। शास्त्र में लिखा है- जैसे घट, कलश और कुम्भ ये तीनों पद पर्याय वाचक हैं और

अर्थ तीनों का एक ही है, केवल नाम से भेद है। इसी प्रकार मंत्र, देवता और गुरु ये तीनों एकार्थ वाचक हैं। गुरु, देवता और मंत्र की एकता के कारण ही गुरु के सान्निध्य में साधना करना सर्वोत्तम बताया गया है।

प्रथम पूज्य गणपति की स्वप्न साधना से मनुष्य अपने जीवन से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर सकता है और उसके अनुकूल कार्य कर सकता है। गणेश चतुर्थी से पूर्णिमा तक सवा लाख जप करने से गणेश जी किसी भी स्वरूप में स्वप्न में भविष्य कथन अथवा संकेत प्रदान करते हैं। जप पूर्ण होने के पश्चात् विधिवत् होम अनिवार्य है। सिद्धि प्राप्त होने पर इसे पूर्णतः गुप्त रखें किसी के भी समक्ष इसकी चर्चा न करें। जैसे माता अपने गर्भ को जतन से छिपाकर रखती है, जिसमें कहीं ठेस न लग जाये, इसी प्रकार मंत्र एवं भक्ति को भी जतन से छिपाकर रखना चाहिये तथा इस विद्या का किसी छोटे एवं अनुचित कार्यों के लिये प्रयोग न करें अन्यथा स्वयं का अहित होता है एवं सिद्धि हानि होती है।

गुरुदीक्षा उपरान्त् पवित्र स्थान एवं अवस्था में गणेश जी का पंचोपचार पूजन कर गुरु के साथ शिव और शिवा का पूजन

एवं ध्यान करें। तत्पश्चात् इस मंत्रः- 'ॐ त्रिजट लम्बोदर कथय-कथय नमुस्तभ्यम्।' का विधिवत् जप करें। इसके साथ नित्य एक माला गणपति गायत्री की भी करें। रात्रिकाल में जप के पश्चात् वहीं शयन करें। गणेशजी की तरफ सिर और पश्चिम की ओर पैर करके बायीं ओर करवट करके गणेशजी का ध्यान करते हुए सो जायें। शुभ स्वप्न देखने के बाद सोना नहीं चाहिये या उसे लिखलें जिससे स्वप्न ना भूले, फिर सो जाये। कई बार मंत्र के माध्यम से प्राप्त स्वप्न में अर्थ या संकेत सामान्यजन के लिये समझ पाना मुश्किल हो जाता है। अतः ऐसी परिस्थिति में उनका फल सुयोग्य ब्राह्मण या विद्वान से समझ लेना चाहिये। मंत्र का चिन्तन जितना अधिक होगा, देवता का साक्षात्कार उतना अधिक होता है।

साधनामार्ग में मनुष्य की ऐसी परीक्षा होती है जैसे आग की भट्ठी में सोने की। किसी मनुष्य को तब तक दैवीय सुख नहीं मिलता जब तक उसने परिश्रमपूर्वक पवित्र आत्मशुद्धि का अभ्यास न किया हो। जो ईश्वर की अटल उपासना करता है, उसके लिये विष भी अमृत हो जाता है, शत्रु मित्र हो जाते हैं, अग्नि और सूर्य भी उसके लिये शीतल हो जाते हैं। सूर्य, चन्द्र, वायु और पृथ्वी आदि को भी रात दिन चक्कर काटने पड़ते हैं।

एक दिन और क्षण भी ये स्वेच्छानुसार आराम नहीं कर सकते, तब हम और आप तो किस गिनती में है।

कर्म-ज्ञान-योग में जो जो कमी रह जाती है उसकी पूर्ति भक्ति से हो जाती है। इसलिये भक्तियोग ही सर्वश्रेष्ठ योग है। देवता एवं गुरुदेव के दर्शन, चित्त की प्रसन्नता, अल्पभोजन, स्वल्पनिद्रा और मन में उल्लास होना यह मंत्रसिद्धि के लक्षण हैं। सम्भव है मंत्रसिद्धि में किसी को थोड़े ही परिश्रम में सफलता प्राप्त हो जाये किंतु शास्त्र का कथन है कि जब तक मंत्र सिद्धि नहीं होती तब तक साधक साधना करता रहे, अन्त में उसे अवश्य सिद्धि मिलेगी।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

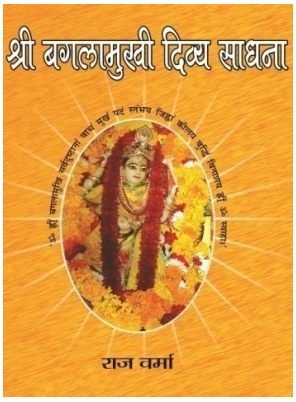

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413